नन्हा मुबल्लिग़

बाप : मुन्ने! होश के नाख़ुन लो, ये किसे अंदर ला रहे हो? घर में तुम्हारी माँ और बहनें मौजूद हैं। इतनी बेवक़ूफ़ाना ह़रकत कि एक अजनबी शख़्स़ को मुँह उठाये अंदर ले आये। गेट के साथ ही घंटी का बटन है, उसे दबाने की भी तुम्हें तौफ़ीक़ न हुई?

बेटा : (बड़ी मा'स़ूमियत के साथ) अब्बा जान! इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है?

बाप : अरे बेवक़ूफ़! किसी ग़ैर आदमी को घर लाना हो तो औ़रतों से कहते हैं कि दूसरे कमरे में चली जायें या पर्दा कर लें।

बेटा : अब्बा जान! स़ह़ीह़ फ़र्माया आपने कि किसी ग़ैर मह़रम नौजवान को यूँ घर ले आना बहुत ही बुरी ह़रकत है। मगर अल्लाह का शुक्र है जिसने मुझे ये तदबीर सुझाई है।

अब्बा जान! रात को आप दफ़्तर से तशरीफ़ लाते ही टीवी लगाते हैं तो अचानक कोई न कोई ग़ैर मह़रम नौजवान पेंट-शर्ट पहने बाक़ाइदा मेकअप किए हुए टीवी स्क्रीन पर नमूदार होकर हमारे घर के अन्दर आ जाता है। अब्बा जान! उस वक़्त भी घर में अम्मी जान, भाभी और बहनें मौजूद होती हैं। उस वक़्त तो आपने उन्हें कभी नहीं कहा कि दूसरे कमरे में चली जायें या पर्दा कर लें।

अब्बा जान! माँ-बाप ने ये तो बड़ा एह्सान किया कि बच्चे के कहे बग़ैर ही अज़ान देने वाले का बन्दोबस्त कर दिया मगर ये म्यूज़िक सिस्टम, टीवी, डीवीडी और डिश। ये किसका एह्सान है?

शायद मैं अपनी बात स़हीह़ त़रीक़े से बयान न कर सकूँ लिहाज़ा देखते हैं कि ह़ज़रत मुह़म्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) इसके बारे में क्या फ़र्माते हैं। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया,

'हर बच्चा जो पैदा होता है वो दीने इस्लाम पर पैदा होता है। फिर उसके माँ-बाप उसको यहूदी, नस़रानी या मजूसी बना देते हैं।' (स़हीह़ बुख़ारी)

अब्बा जान! आप अक्ष़र बड़ी बाजी के कमरे में जाते हैं। आपने देखा कि कमरे में फिल्मी एक्टरों की कितनी तस़्वीरें लगी हुई हैं। आपने कभी पूछा कि ये सब क्या बेहूदगी है?

मैं अक्ष़र सोचता हूँ कि किसी की बहन या बेटी के स्कूल बैग या पर्स से मुह़ल्ले के किसी लड़के की फ़ोटो निकल आये तो फ़साद बर्पा हो जाता है। क़त्ल व ग़ारत तक नौबत पहुँच जाती है। लेकिन अब्बा जान! ये कैसा ज़ुल्म है कि आज तक़रीबन् हर किसी की बहन या बेटी के कमरों में बल्कि उनकी किताबों और कॉपियों में फिल्म एक्टरों और खिलाड़ियों की तस़्वीरें होती हैं। इस पर किसी की ग़ैरत नहीं जागती ? क्या हो गया है हमारी अ़क़्लों को? ये भी शैत़ान की एक बहुत बड़ी चाल है।

दरह़क़ीक़त हम लोग मरना भूल चुके हैं। रब्बे कअ़बा की क़सम! अगर हमें अल्लाह के सामने पेश होने का ख़ौफ़ होता और जन्नत के ह़ुस़ूल की तड़प होती तो आज अपनी बच्चियों की